सर्वज्ञ शक्ति

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग

श्री मुक्तानन्द आश्रम में हुए आनन्दमय जन्मदिवस २०१७ के सत्संगों से

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : १

वाणी अग्रवाल

वर्ष २००१ में, मैं अपने पति गणेश के साथ बॉस्टन में रहती थी। छः वर्षों से हम कोशिश कर रहे थे कि हमें बच्चा हो। हमने कई अलग-अलग उपचार कराए, किन्तु सब व्यर्थ। वह हमारे लिए बड़ा ही निराशाजनक व थका देने वाला समय था। आख़िरकार हमने अपने सभी प्रयास बन्द करने का निर्णय लिया। हमने सोचा, "यदि यह होता है तो बढ़िया, न हो तो भी ठीक है।" अर्थात्, हमने समर्पण कर दिया।

सभी तरह की दवाइयाँ बन्द करने के तीन या चार महीने बाद, मैंने एक सपना देखा। मैंने देखा कि मैं श्री मुक्तानन्द आश्रम के अनुग्रह भवन की निचली लॉबी में खड़ी हूँ। मैं देखती हूँ कि गुरुमाई जी ऊपर की लॉबी से मेरी ही ओर आ रही हैं। आकर वे मेरे सामने रुकती हैं और गहरी दृष्टि से मेरी ओर देखती हैं। फिर वे मेरे पेट पर अपना हाथ फेरती हैं और कहती हैं, "मैं इसे भगवान से लेकर तुम्हें दे रही हूँ।"

जब मैं जागी तो गुरुमाई जी के शब्द मेरे कानों में गूँज रहे थे। वह स्वप्न इतना वास्तविक था कि आँखें खोलने के बाद भी, मुझे उसकी एक-एक बात अच्छी तरह याद थी।

और, हाँ इसके कुछ ही समय बाद मैं अपनी बेटी अर्पिता के समय गर्भवती हुई! डॉक्टर द्वारा इस बात की पुष्टि हो जाने के बाद, गणेश व मैं श्री मुक्तानन्द आश्रम में सेवा अर्पित करने गए। हमें आशा थी कि हमें यह ख़ुशख़बर गुरुमाई जी को बताने का मौक़ा मिलेगा। अब तक हमने यह बात किसी को नहीं बताई थी।

आश्रम पहुँचने पर हम अनुग्रह भवन की निचली लॉबी में प्रवेश कर ही रहे थे कि वहाँ हमने गुरुमाई जी को देखा! जैसा मैंने स्वप्न में देखा था, बिलकुल वैसे ही गुरुमाई जी ऊपर की लॉबी से हमारी ही ओर

आ रही थीं। गुरुमाई जी ठीक मेरे सामने आकर रुक गईं और मैं कुछ कहूँ इससे पहले ही उन्होंने मेरे पेट पर अपना हाथ फेरा और कहा, "अन्दर कुछ है क्या?"

जब मैंने हाँ में अपना सिर हिलाया, गुरुमाई जी हँसने लगीं और आगे बढ़ गईं।

उसके कुछ सप्ताहों के बाद मैं फिर आश्रम गई थी। उस आश्रम-वास के दौरान भी मुझे श्रीगुरुमाई के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

दर्शन के समय श्रीगुरुमाई ने मुझसे मेरी गर्भावस्था के बारे में बात की; फिर दूसरे विषयों पर बात होने लगी। दर्शन समाप्त होने पर, जाते-जाते गुरुमाई जी मेरी ओर मुड़ीं और उन्होंने मुझसे कहा, "तुम रोज़ श्रीगुरुगीता और श्रीरुद्रम का पाठ करना, बच्चे को उनसे लाभ मिलेगा।"

इस मार्गदर्शन को पाकर मैं बहुत खुश व कृतज्ञ थी।

उस दिन से अपनी पूरी गर्भावस्था के दौरान मैंने हर रोज़ श्रीगुरुगीता और श्रीरुद्रम का पाठ किया।

प्रसव का समय निकट आने पर मेरी तबीयत थोड़ी बिगड़ गई। मेरे पति मुझे अस्पताल ले गए। वह २ जून की शाम थी। मेरे डॉक्टर ने मेरी जाँच की और कहा कि मुझे इन्फ़ेक्शन है और बुख़ार भी है। उन्होंने मुझे एन्टीबायोटिक का इन्जेक्शन दिया और अर्पिता के दिल की धड़कन की जाँच करने के लिए मुझे एक मशीन से जोड़ा गया। अर्पिता के दिल की धड़कन बहुत तेज़ थी। डॉक्टर बहुत चिन्तित थे क्योंकि इसका अर्थ था कि बच्ची ख़तरे में हैं।

डॉक्टर ने कहा कि एन्टीबायोटिक का असर आरम्भ होने पर शायद बच्ची को भी आराम मिलेगा।

लेकिन कुछ घण्टों के बाद भी अर्पिता के दिल की धड़कन बहुत तेज़ ही थी। यह देखकर डॉक्टर ने सीज़ेरियन करने का निर्णय लिया, अन्यथा बच्ची की जान ख़तरे में हो सकती थी।

डॉक्टर ने कहा कि वे मुझे ऑपरेशन के लिए बीस मिनट में तैयार करेंगे। मेरे पति व मैं, दोनों ही बहुत चिन्तित थे। डॉक्टर जब ऑपरेशन की तैयारी कर रहे थे, तब प्रतीक्षा करते समय हमने श्रीगुरुगीता और श्रीरुद्रम दोनों सी.डी. साथ-साथ चलाने का निर्णय लिया। जैसे ही मन्त्र आरम्भ हुए, अर्पिता के दिल की धड़कन की गति कम होने लगी। और हम आश्चर्यचकित हो गए जब बीस मिनट के भीतर ही उसके दिल की धड़कन सामान्य हो गई। यह देखकर सभी डॉक्टर भी आश्चर्यचकित रह गए।

अगली सुबह मैंने नैसर्गिक रूप से अर्पिता को जन्म दिया।

श्रीगुरुमाई ने गणेश को व मुझे, ईश्वर का यह अनमोल उपहार दिया था। और श्रीगुरुमाई ने मुझे एक आदेश दिया, जिसे मुझे पूरा करना था, ताकि यह उपहार हमारे जीवन में आए। और ऐसा ही हुआ।

गुरुमाई जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। अपने हृदय की गहराइयों से मैं आपको धन्यवाद देती हूँ।

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : २

क्षमा फ़ॅरार

वर्ष १९९१ की वसन्त ऋतु में श्रीगुरुमाई ऑस्ट्रेलिया में 'टीचिंग विज़िट्स्' की यात्रा पर थीं। उस दौरान मैं श्री मुक्तानन्द आश्रम से गुरुमाई जी की यात्रा के लिए एक लेखक व सम्पादक के रूप में सेवा अर्पित कर रही थी। एक दिन एक सेवाकर्ता ने मुझे ऑस्ट्रेलिया से फ़ोन किया और एक सेवाकार्य बताया जिसे जल्द-से-जल्द पूरा करना था। मैंने तत्काल ही उस कार्य को आरम्भ कर दिया और जैसे ही वह पूरा हुआ, तुरन्त ही ऑस्ट्रेलिया भेज दिया। इसके कुछ समय बाद मैं भगवान नित्यानन्द मन्दिर में ध्यान करने गई।

मैं मन्दिर में बड़े बाबा के साथ अकेली बैठी थी कि अचानक मुझे एक दृष्टान्त हुआ जिसमें मैं अपनी सुषुम्ना का स्वर्णिम स्तम्भ देख पा रही थी। मैंने अनुभव किया कि कुण्डलिनी शक्ति का तेजोमय प्रकाश मध्यनाड़ी में एक नए स्तर पर ऊपर उठ चुका है और मेरे हृदयक्षेत्र के ठीक ऊपर तक पहुँचा है। मुझे ऐसा लगा कि समय के साथ, यह प्रकाश इस स्थान से ऊपर उठता जाएगा। इस दृष्टान्त के साथ मुझे एक दरवाज़े की चटकनी खुलने की आश्चर्यजनक अन्तर-ध्वनि भी सुनाई दी।

इस प्रकाश को देखकर, इस ध्वनि को सुनकर, ऐसा लगा जैसे किसी ने झटके से मुझे गहरी नींद से जगा दिया हो। मुझे याद है, उस समय मैंने सोचा था : "मुझे अभी-अभी एक सपने से जगा दिया गया है! एक *बुरे* सपने से!" और फिर मैंने सोचा: "मैं अपने जीवन के सपने से जग गई हूँ।"

ऐसा नहीं कि मेरा जीवन उस समय सच में *बुरा* था — किन्तु उस क्षण में, मुझे यह ज्ञात हुआ कि मेरी चेतना को थोड़े अन्धकार की आदत हो गई थी। मैं ऐसी कई नकारात्मकताएँ व संशय के साथ जी रही थी जिनके बारे में मैंने आत्म-निरीक्षण नहीं किया था। परन्तु अब, मैंने देखा कि मेरी चेतना का प्रकाश ऐसे स्थान में पहुँच गया है जहाँ और भी अधिक प्रकाश है, और भी अधिक सकारात्मकता व विश्वास है।

मैं श्रीगुरुमाई के प्रति कृतज्ञता से सराबोर हो गई, कि मुझे सिद्धयोग पथ की कृपा व सिखावोनयाँ प्राप्त हैं तथा गुरुमाई जी ने मुझे अन्धकार से निकलकर प्रकाश में आने के लिए मार्गदर्शन दिया है। मैंने महसूस किया कि यह मेरे भाग्य का एक महत्त्वपूर्ण क्षण है।

अगले दिन सुबह-सुबह, ऑस्ट्रेलिया से उस सेवाकर्ता ने मुझे फिर से फ़ोन किया। उसने कहा, “श्रीगुरुमाई आपके भेजे हुए सेवाकार्य से बहुत ख़ुश हुईं। और उन्होंने मुझे आपको यह बताने के लिए कहा है :

“जब मैं इस सेवाकार्य को गुरुमाई जी के पास ले गई, उन्होंने मुझे उसी समय आपको फ़ोन करके आपके कार्य के लिए धन्यवाद देने को कहा। किन्तु जब मैं अपने ऑफ़िस पहुँची तो मैंने देखा कि अभी तो श्री मुक्तानन्द आश्रम में आधी रात होगी, और मैं आपको नींद से जगाना नहीं चाहती थी।

“उस दिन बाद में, जब मैं फिर से गुरुमाई जी से मिली तो उन्होंने सबसे पहले मुझे पूछा, ‘क्या तुमने क्षमा को फ़ोन करके बताया?’

“मैंने कहा, ‘अभी तक तो नहीं, गुरुमाई जी, क्योंकि उस समय वहाँ आधी रात थी।’

“गुरुमाई जी ने कहा, ‘लेकिन मैं चाहती थी कि तुम उसी समय क्षमा को फ़ोन करो। वह ख़ुशी-ख़ुशी फ़ोन का उत्तर देती। कौन जाने, उस समय शायद वह कोई बुरा सपना देख रही हो और श्रीगुरु का फ़ोन उसे जगाता तो वह बहुत ख़ुश हो जाती। आधी रात को मुझसे सन्देश पाकर वह बहुत ख़ुश होती।’ ”

आज भी मैं विस्मय से भर जाती हूँ जब मैं श्रीगुरु के साथ ऐक्य के उस आनन्दमय क्षण को याद करती हूँ। श्रीगुरुमाई की अन्तःप्रज्ञा, उनका संकल्प, उनके उत्तर, ये सभी परम चेतना के स्पन्दनों से भिन्न नहीं हैं। उन हज़ारों, लाखों प्रसंगों के रहस्य को कैसे समझाया जाए जिनमें, वह बात जो केवल मन व इन्द्रियों से नहीं जानी जा सकती, उसे गुरुमाई जी जान लेती हैं और उसका उत्तर देती हैं!

और गुरुमाई जी, आप बिलकुल सही हैं : आपका फ़ोन आने पर मुझे *हमेशा ही* ख़ुशी होगी; किसी भी समय, कहीं भी।

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : ३

बर्नाडेट मर्फ़ी

जो प्रसंग मैं सुनाने जा रही हूँ वह सन् १९९५ के फ़रवरी माह की एक शाम का है। उस दिन कड़ाके की ठण्ड थी। मुझे एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन में स्टाफ़ सदस्या के रूप में सेवा अर्पित करते हुए सात साल हो गए थे। मैं श्री मुक्तानन्द आश्रम में अपने कमरे में थी। बढ़ती हुई कला का चन्द्रमा आकाश में उदित हुआ था और बाहर तेज़ी-से बहती हवा की सरसराहट सुनाई दे रही थी।

मेरे मन में एक बात चल रही थी जिसके बारे में मैं गुरुमाई जी से मार्गदर्शन चाहती थी, पर मुझे सही शब्द नहीं मिल रहे थे। मुझे हमेशा से ही जर्नल लिखने का बहुत शौक़ था, इसलिए मैं अपने पलंग के पास ज़मीन पर बैठ गई और मैंने अपने जर्नल में गुरुमाई जी को एक पत्र लिखा; यह जर्नल उन्होंने मुझे कई महीनों पहले दी थी।

लिखते-लिखते, मुझे बहुत प्रबलता से गुरुमाई जी की उपस्थिति महसूस होने लगी। मुझे लगा कि कृपा मुझे स्पष्टता की स्थिति में खींचती जा रही है। मेरे विचार शान्त हो गए और मेरी कलम से पत्र के अन्तिम शब्द निकलते-निकलते, मेरे हृदय में प्रशान्ति व समाधान का भाव उभर आया।

लेखन समाप्त होते-होते, मैं गुरुमाई जी के साथ अपना जुड़ाव इतनी गहनता व स्पष्टता से अनुभव कर रही थी, मानो वे ठीक वहीं मेरे कमरे में मौजूद हों। मुझे उनके दर्शन की गहरी ललक महसूस हुई, बस उन्हें धन्यवाद कहने के लिए।

एक विचार आया : *गुरुमाई जी गलियारे से इस ओर आ रही हैं। मुझे महसूस हो रहा है, वे आ ही रही होंगी!* फिर मेरा तर्क करने वाला मन बीच में आ गया। *मंगलवार शाम के आठ बजे हैं। तुम सपना देख रही हो। गुरुमाई जी तुम्हारे कमरे में पहले कभी नहीं आईं, और अभी, रात के इस समय उनके यहाँ आने की कोई वजह है ही नहीं।*

परन्तु गुरुमाई जी की उपस्थिति इतनी प्रबल थी कि मुझे दरवाज़े से बाहर झाँकना ही था। एक बार जल्दी-से बस थोड़ा-सा झाँक लूँ : इसमें हर्ज़ ही क्या है? इसलिए मैं दरवाज़े के पास गई और धीरे-से दरवाज़ा खोला।

गुरुमाई जी न केवल मेरे गलियारे में थीं; वे मेरे दरवाज़े के ठीक सामने खड़ी थीं, और दरवाज़ा खोलने के लिए उनका हाथ दरवाज़े के हैन्डल पर था!

बड़े ही आश्चर्य और हर्ष के साथ मैंने कहा, "शुभ सन्ध्या, गुरुमाई जी!"

गुरुमाई जी ने पूछा, "तुम्हें कैसे पता चला? क्या तुम्हें महसूस हुआ कि मैं यहाँ हूँ?"

मैंने कहा, "जी हाँ, गुरुमाई जी! मैं आपकी उपस्थिति को बहुत प्रबलता से महसूस कर रही थी।"

गुरुमाई जी मेरे कमरे के अन्दर आईं, मेरी पूजा के पास खड़ी हुईं और खिड़की से बाहर चन्द्रमा को देखने लगीं। उन्होंने कहा, "यहाँ पर अच्छा दिख रहा है; यहाँ पर अच्छा लग रहा है।"

मैंने गुरुमाई जी को धन्यवाद दिया और कहा, "मैं अपनी जर्नल में आप ही को पत्र लिख रही थी और मैं जो अपने मन की शान्ति और स्पष्टता महसूस कर रही हूँ, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहती थी।"

अपनी आँखों में चमक लिए, गुरुमाई जी ने कहा, "बहुत अच्छा!" और वे जाने के लिए मुडीं। मुझे याद है, मैं बिल्कुल शान्त, कृतज्ञ और स्तब्ध महसूस कर रही थी जब हमने एक-दूसरे को शुभरात्रि कहा।

बाईस वर्ष बीत गए हैं और मैं आज भी उस उपहार को महसूस कर सकती हूँ जो गुरुमाई जी ने मुझे उस शाम दिया था : यह ज्ञान और अनुभव कि श्रीगुरु और शिष्य हृदयस्थान में सदैव एक हैं।

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : ४

स्वामी इन्दिरानन्द

सन् १९८५ में मैं ओकलैन्ड के सिद्धयोग आश्रम गई थी। मैं वहाँ पहली बार गई थी और सत्संगों व कोर्स में वक्ता की सेवा अर्पित कर रही थी।

ओकलैन्ड में कुछ समय रहने के बाद, एक दिन मुझे श्रीगुरुमाई के सान्निध्य में होने की गहरी ललक महसूस होने लगी। गुरुमाई जी उस समय न्यूयॉर्क शहर में थीं जहाँ सत्संग व शक्तिपात ध्यान-शिविर का आयोजन किया गया था। मुझे याद है, मैं सोच रही थी, "पता नहीं, उन्हें मालूम है या नहीं कि मैं यहाँ हूँ।" मेरे मन में उदासी छाने लगी। मुझे याद है, मैं अपने मन की गहराई से गुरुमाई जी से प्रार्थना

करने लगी, “गुरुमाई जी, कृपया मुझे दिखाइए कि आपको पता है कि मैं यहाँ हूँ। कृपया मुझे दिखाइए कि आप मेरे साथ हैं।”

जैसे ही मैंने प्रार्थना की मुझे ख़ुशी महसूस होने लगी। मैं अपने कमरे की सफ़ाई लरने लगी, और पूरी सफ़ाई के दौरान मेरे अन्दर प्रफुल्लता का भाव बना रहा। और फिर, जब मैं झाड़ू लगा रही थी तभी फ़ोन की घण्टी बजी। जब मैंने फ़ोन उठाया तो स्विचबोर्ड पर उपस्थित सेवाकर्ता ख़ुशी से चीख रही थी।

आख़िरकार, मैं समझ पाई कि वह क्या कह रही है। वह कुछ ऐसा था, “गुरुमाई जी फ़ोन पर हैं और आपसे बात करना चाहती हैं। क्या मैं उनका फ़ोन आपको दूँ?”

बिना हिचकिचाए, मैंने तुरन्त कहा, “हाँ, हाँ! बिलकुल!”

फ़ोन की एक क्लिक की आवाज़ हुई और फिर एक गहरी, मखमली, प्यारभरी आवाज़ यह कहते हुए सुनाई दी, “इन्दिरानन्द, आप कैसी हैं?”

“मैं अच्छी हूँ, गुरुमाई जी!” मैंने ऊँचे स्वर में और उत्साह से कहा। और फिर मैं थोड़ा रुकी, अपनी आवाज़ को नीचा कर मैंने कहा, “अच्छी हूँ, गुरुमाई जी! मैं बहुत अच्छी हूँ! मैं बिलकुल ठीक हूँ!”

फिर हमने बाते कीं। गुरुमाई जी ने ओकलैन्ड आश्रम के बारे में पूछा और उन्होंने न्यूयॉर्क शहर में होने वाले सत्संग के बारे में बताया।

आख़िर में, गुरुमाई जी ने कहा कि उन्हें फ़ोन रखना होगा क्योंकि वे कार में से कहीं जा रहीं थीं और वे लोग अपने गन्तव्य-स्थान पर बस पहुँचने ही वाले हैं।

हमने एक-दूसरे से विदा ली और हमारी बात समाप्त होने ही वाली थी कि गुरुमाई जी ने नटखट-सी आवाज़ में कहा, “आप मुझे अक्सर फ़ोन क्यों नहीं करतीं?”

और फिर मुझे फ़ोन रखने की क्लिक सुनाई दी।

दोपहर भर मैं यही सोचती रही कि मुझे “अक्सर फ़ोन करने” को कहने से गुरुमाई जी का क्या तात्पर्य था। मैं उलझन में पड़ गई क्योंकि फ़ोन मैंने नहीं, गुरुमाई जी ने किया था!

और मुझे यह बात शाम को समझ में आई जब मैंने यह अनुभव सत्संग में बताया और पूरा हॉल एक-साथ आश्चर्यचकित हो उठा। तभी मुझे सचमुच समझ में आया कि गुरुमाई जी के कहने का क्या मतलब था। और मैंने एक अनमोल सीख सीखी जिसने मेरी पूरी साधना में मुझे सम्बल दिया है :

गुरुमाई जी हमेशा हमारे साथ हैं। जब हम अपने पूरे हृदय से उन्हें पुकारते हैं, तो गुरुमाई जी को पता होता है।

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।